सौन्दर्यलहरी-उपासना-प्रकल्प

अंकुर नागपाल (दिल्ली)
पी.एच.डी-शोधार्थी, वेदान्त-विभाग,
श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

दस महाविद्याओं में राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी भगवती ललिताम्बा/श्रीविद्या अन्यतम है। यदि साधारणतया कहें, तो भगवती ललिताम्बा माता पार्वती का वह मूल/तात्त्विक/अंशी रूप है; जो सदैव परमधाम/मणिद्वीप में अवस्थित रहता है।

भगवतीजी का नाम है : 'श्री', 'सुन्दरी' या 'ललिता'; अर्थात् उनका स्वरूप माया के विकारों से दूर रहते हुए सदा दिव्यतम सुन्दर [अर्थात् अक्षुण्ण वैभवशाली, सच्चिदानन्दमय एवं सर्वविकारशून्य] बना रहता है। वे भगवती श्रीदेवी त्रिपुर = तीन पुर = जीव के तीनों [अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म एवं कारण] शरीरों के भीतर, सभी के परमप्रेमास्पद आत्मा के रूप में विद्यमान रहतीं हैं। इसलिए उन्हें 'त्रिपुरसुन्दरी' कहते हैं। उनके उपासक को निश्चित ही सभी लाभ--चाहे सांसारिक भोग हों या मोक्ष--प्राप्त होते हैं। चूंकि वे श्रीमाता ब्रह्मविद्या के रूप में जीव को उसकी शिवरूपता का बोध करवातीं हैं, इसलिए उन्हें 'श्रीविद्या' भी कहते हैं।

ललिता-आदि दसों महाविद्याओं की उपासना में स्वस्थ गुरुपरम्परा से दीक्षा अनिवार्य है; अन्यथा साधकों को भीषण विपरीत फल मिलते हैं। इसलिए जिन्हें अत्यन्त प्रामाणिक गुरु के मुखारविन्द से श्रीविद्याक्रम की मन्त्रदीक्षा-आदि नहीं मिली है; उन्हें श्रीविद्या-मन्त्रोपासना का दुःसाहस नहीं करना चाहिए। हम-जैसे सामान्य लोग श्रीविद्या-मन्त्रदीक्षा हेतु तब तक प्रयास न करें, जबतक हमें यथोचित साधना हेतु पर्याप्त अवकाश न मिले।

साधनाएँ मनोमुखी नहीं, बल्कि गुरुपरम्परा के अनुसार होती हैं। श्रीविद्या-साधना में प्रवेशदीक्षा (भुवनेशी-बाला-गणपति मन्त्रों) से लेकर पूर्णाभिषेक तक पहुँचने में कई वर्षों का समय लग जाता है। और उसमें भी यदि साधना के नियमों का अपेक्षित पालन न हो, अथवा लोभ या मलिन चित्त से श्रीविद्या-साधना की जाए; तो साधक को पतित होने से कोई नहीं बचा सकता।

हम-जैसे लोगों पर भी भगवती श्रीविद्या का अनुग्रह हो, एतदर्थ सनातन-धर्म के उद्धारक तथा महान् वैदिक दार्शनिक शिवावतार जगद्गुरु भगवान् श्रीशंकराचार्यजी (7वीं शती ई.) ने 'सौन्दर्यलहरी' नामक एक अनुपम स्तोत्र की रचना की है। एक सौ श्लोकों वाले उस स्तोत्रकाव्य में भगवतीजी के परम तात्त्विक सौन्दर्य की गवेषणात्मक लहरी प्रवाहमान है, इसीलिए उसकी 'सौन्दर्यलहरी' संज्ञा सफल है।

इसके पाठ में ब्राह्मण-आदि चारों वर्णों, ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-आदि चारों आश्रमों तथा स्त्री-पुरुष-आदि सभी लोगों को अधिकार है। इसके पाठ से श्रीविद्या-साधना की औपचारिक सम्पन्नता हो जाती है; ऐसा पूर्वाचार्यों का अभिमत है। कारण कि इसमें 'श्रीविद्या-पंचदशाक्षरी-मन्त्र' एवं 'ललितासहस्रनाम' का सम्पूर्ण स्वारस्य प्रतिष्ठित है। जनश्रुति है कि श्रीशंकराचार्यजी को यह ग्रन्थ साक्षात् कैलासपति महादेवजी

 ISSN 2278-7933

से प्रसादरूप में प्राप्त हुआ था। हालांकि चिद्विलासमुनि (12वीं शती ई.) ने अपने 'शंकरविजयविलास' (10.4) में इसको श्रीशंकराचार्यजी की निजी रचना बताया है। यह बात अधिक युक्तिसंगत लगती है; क्योंकि 'सौन्दर्यलहरी' में श्रीशंकराचार्यजी के शब्दों पर उनके परमगुरु श्रीगौडपादाचार्यजी की 'सुभगोदयास्तुति' का स्फुट प्रभाव परिलक्षित होता है।

श्रीगौडपादाचार्यजी ने 'अनुगीताभाष्य' एवं 'माण्डूक्यकारिका' तथा 'सुभगोदयास्तुति' एवं 'श्रीविद्यारत्नसूत्र' के माध्यम से क्रमशः जिन वेदान्त एवं आगम सिद्धान्तों को सुस्थिर किया, उन्हीं को श्रीशंकराचार्यजी ने प्रस्थानत्रयी-भाष्य एवं असंख्य स्तोत्रों के द्वारा विशद किया है।

अतः हम यही मानते हैं कि श्रीशंकराचार्यजी ने अपनी तपःपूत लेखनी से 'सौन्दर्यलहरी' नामक इस अजेय स्तोत्रकाव्य को प्रकट किया है। उनकी तपस्या के अमोघ प्रभाव से इस स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक का यदि भगवतीजी की प्रार्थना के रूप में कोई जप करे, तो आज भी उसके अभीष्टों की यथायोग्य सिद्धि सम्भव है। कहीं कोई साधक भक्तिपूर्वक प्रतिदिन इसका सम्पूर्ण शुद्ध पाठ करने लग जाए, तो उसको मिलने वाला परम लाभ वर्णनातीत है। उसके जीवन में जब जैसी आवश्यकता होगी, वैसी आपूर्ति भगवती स्वयं ही कर देंगी।

पाठकों की सुविधा हेतु प्रत्येक श्लोक के पाठ से मिलने वाले फल को यहाँ सूचीबद्ध किया जा रहा है :

श्लो.1) "शिवः शक्त्या..." = सभी मनोरथों एवं पुरुषार्थों की सिद्धि; विषम परिस्थितियों पर नियन्त्रण।

श्लो.2) "तनीयांसं..." = निकटवर्ती लोगों पर प्रभुत्व; प्रकृति/स्वभाव पर विजय।

श्लो.3) "अविद्यानां..." = सभी ऐश्वर्यों एवं विद्याओं की प्राप्ति; विशेषतः वेदविज्ञान में दक्षता।

श्लो.4) "त्वदन्यः..." = घोर रोग, दरिद्रता एवं संकटों का समूल निवारण; विशाल सम्पत्तियों की स्वामित्व।

श्लो.5) "हरिस्त्वां..." = सभी प्राणियों की अनुकूलता; दम्पत्ती में परस्पर आकर्षण।

श्लो.6) "धनुः पौष्पं..." = सन्तान-दोष की निवृत्ति।

श्लो.7) "क्वणत्कांची..." = शत्रुविजय, उच्चाधिकारियों का अविरोध; भगवतीजी के प्रभाव का साक्षात्कार।

श्लो.8) "सुधासिन्धोः..." = बन्धन एवं कर्ज से मुक्ति; सभी वादों में विजय।

श्लो.9) "महीं मूला..." = लुप्त व्यक्ति का प्रत्यागमन; पंचभूतों पर विजय।

श्लो.10) "सुधाधारा..." = शरीर (वीर्य/रजस्) का शोधन; जलीय विषमताओं का शमन; रजोदर्शन-बाधा का निदान।

श्लो.11) "चतुर्भिः..." = वन्ध्यादोष का निवारण; उत्तम सन्तान की प्राप्ति।

श्लो.12) "त्वदीयं..." = सभा-विजय एवं कवित्वशक्ति की प्राप्ति; वाणीदोष का परिहार।

श्लो.13) "नरं वर्षीयांसं..." = मनोवांछित स्त्री/पुरुष अथवा दम्पत्ती में परस्पर का आकर्षण; यौन विषमताओं का निरास।

श्लो.14) "क्षितौ षट्..." = वैयक्तिक विपन्नता का नाश; सामूहिक अनुष्ठान से दुर्भिक्ष एवं महामारी-आदि की निवृत्ति।

श्लो.15) "शरज्ज्योत्स्ना..." = ज्ञान, कवित्व, विद्या, कल्पनाशक्ति एवं मेधा की प्राप्ति।

श्लो.16) "कवीन्द्राणां..." = मूर्खता का निवारण; साधुता का उदय; वेद-शास्त्र-आदि के अक्षुण्ण ज्ञान की प्राप्ति; सभी विद्याओं, भाषाओं एवं कलाओं में विशेष दाक्षिण्य; सभाओं में वर्चस्व; नकारात्मक शक्तियों से रक्षा।

श्लो.17) "सवित्रीभिः..." = विज्ञान एवं शास्त्र का तलस्पर्शी ज्ञान; विवाह हेतु उपयुक्त जीवनसाथी की प्राप्ति; अदृश्य महापुरुषों की कृपा।

श्लो.18) "तनुच्छाया..." = अपने समीपवर्ती लोगों का पराभव; बालकों एवं स्त्रियों की अनुकूलता; शिल्प-चित्रकला-आदि में दक्षता; पशुओं एवं अमानवीय ऊर्जाओं पर नियन्त्रण; वाक्सिद्धि।

श्लो.19) "मुखं बिन्दुं..." = समीपवर्ती लोगों (विशेषतः युवतियों) का पराभव; सरकार एवं न्यायालय में महत्त्व; पशुओं पर नियन्त्रण।

श्लो.20) "किरन्तीं..." = रोग, भय, दृष्टिदोष, जन्तुविष-आदि की शान्ति।

श्लो.21) "तटिल्लेखा..." = अपनी समीपवर्ती विरोधियों का उपशमन, लोकापवाद से मुक्ति, शारीरिक एवं सैन्यबल में

वृद्धि; आत्म-साक्षात्कार।

श्लो.22) "भवानि त्वं..." = उच्चाधिकार, सभी ऐश्वर्यों एवं अभीष्टों सहित तत्त्वज्ञान की प्राप्ति।

श्लो.23) "त्वया हृत्वा..." = सभी ऋणों, भूत-आदि की बाधाओं एवं तीनों तापों से मुक्ति; विशाल धन-सम्पत्ति एवं गोवंश का लाभ।

श्लो.24) "जगत्सूते..." = भूत-प्रेत-पिशाच-आदि दैवी सत्ता तथा अपस्मार-आदि प्रारब्ध-जनित रोगों की शान्ति; पितृशाप से मुक्ति।

श्लो.25) "त्रयाणां..." = उच्च पदाधिकार या राज्यसुख की प्राप्ति; आयवृद्धि; प्रभुत्वलाभ।

श्लो.26) "विरिंचिः..." = शत्रुविजय; सभी मनोरथों की सिद्धि; सार्वदिक् सफलता।

श्लो.27) "जपो जल्पः..." = साधना में सिद्धि; भगवती का साक्षात्कार; आत्मज्ञान; मन्त्रशास्त्र में दक्षता।

श्लो.28) "सुधामप्या..." = अपमृत्यु एवं दुर्घटनाओं का निवारण; पतिव्रताओं को अखण्ड सौभाग्य का लाभ।

श्लो.29) "किरीटं..." = दुष्ट, मूर्ख एवं उद्दण्ड विरोधी लोगों तथा पशुओं पर नियन्त्रण; सहज एवं सुगम प्रसव।

श्लो.30) "स्वदेहोद्भूताभिः..." = यौगिक सिद्धियों एवं अतिमानुष सामर्थ्य की प्राप्ति।

श्लो.31) "चतुःषष्ट्या..." = सरकार एवं लोगों की अनुकूलता; सभी कामनाओं की पूर्ति।

श्लो.32) "शिवः शक्तिः..." = रसायनशास्त्र में दक्षता; सभी विद्याओं की सिद्धि; व्यापार में लाभ।

श्लो.33) "स्मरं योनिं..." = प्रचुर धन की प्राप्ति।

श्लो.34) "शरीरं त्वं..." = विद्या, प्रज्ञा, मेधा, बुद्धि एवं प्रतिभा की प्राप्ति; देवी द्वारा संशयों का निवारण एवं मार्गदर्शन; चर्मरोग, मधुमेह, क्षयरोग आदि का निवारण।

श्लो.35) "मनस्त्वं..." = क्षयरोग, अस्थमा, श्वास-कासरोग आदि का उपशमन; स्वप्न में देवदर्शन।

श्लो.36) "तवाज्ञा..." = असाध्य रोगों एवं भीतियों (फोबिया) की निवृत्ति; नेत्ररोग का निदान।

श्लो.37) "विशुद्धौ..." = ब्रह्मराक्षस-आदि दैविक बाधाओं एवं अग्निजनित रोगों की शान्ति।

श्लो.38) "समुन्मीलत्..." = बालारिष्ट (नजर-बालज्वर-शिशुरोग-पोलियो-आदि) का निवारण।

श्लो.39) "तव स्वाधिष्ठाने..." = दुःस्वप्नों एवं तत्सम्बन्धी बाधाओं की शान्ति; शंकालु स्वभाव का निरास।

श्लो.40) "तडित्त्वन्तं..." = इष्टदेवता एवं अभीष्ट लक्ष्मी का स्वप्न-आदि द्वारा साक्षात्कार; दूरदृष्टि का लाभ; अज्ञान-नाश।

श्लो.41) "तवाधारे..." = उदरपीड़ा-आदि की निवृत्ति; स्वास्थ्य-लाभ।

श्लो.42) "गतैर्माणिक्य..." = महोदर [अर्थात् एक-साथ हुए अनेक उदररोगों] एवं मूत्र-सम्बन्धी रोगों का निवारण।

श्लो.43) "धुनोतु ध्वान्तं..." = सभी प्राणियों की अनुकूलता; प्रयासों में सफलता।

श्लो.44) "तनोतु क्षेमं..." = कल्याण-प्राप्ति एवं सभी बाधाओं की निवृत्ति; दूसरों पर प्रभुत्व।

श्लो.45) "अरालैः..." = वाक्सिद्धि; अष्टलक्ष्मी की कृपा; भविष्यदर्शन का सामर्थ्य; कवित्व की प्राप्ति।

श्लो.46) "ललाटं..." = सुगम गर्भधारण का सामर्थ्य; मनोवांछित वस्तु की प्राप्ति; रूठे स्वजन का प्रत्यागमन।

श्लो.47) "भ्रुवौ भुग्ने..." = देवताओं एवं प्रभावशाली लोगों की अनुकूलता।

श्लो.48) "अहः सूते..." = ग्रहदोषों की शान्ति; कोमल एवं मध्यम प्रारब्ध का निवारण।

श्लो.49) "विशाला..." = स्वप्न-आदि में विलुप्त निधि का दर्शन; अपहृत सम्पत्ति का लाभ; नेत्ररोग की शान्ति।

श्लो.50) "कवीनां..." = शत्रुओं में विद्वेष; चेचक-आदि की शान्ति।

श्लो.51) "शिवे शृङ्गारार्द्रा..." = इष्ट पदार्थ या प्रयोजन की सिद्धि; देवी की कृपा।

श्लो.52) "गते कर्णा..." = कर्ण एवं नेत्र के रोगों का उपशमन।

श्लो.53) "विभक्तत्रैवर्ण्य..." = सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति; भविष्यदर्शन की क्षमता; देवीदर्शन।

श्लो.54) "पवित्रीकर्तुं..." = पापमोचन; चित्तशुद्धि; उत्सर्जन या यौन सम्बन्धी रोगों का निवारण [विशेषतः स्त्रियों के

लिए]।

श्लो.55) "निमेषोन्मेषा..." = पौरुष में वृद्धि; उत्तम सन्तान की प्राप्ति; शत्रुबाधा-निवारण।

श्लो.56) "तवापर्णे..." = उच्चाधिकार-प्राप्ति; अनुकूल सुअवसरों की प्रचुरता; कारागार से मुक्ति; सामूहिक अनुष्ठान से ऐच्छिक जलवृष्टि।

श्लो.57) "दृशा द्राघीयस्या..." = सभी सौभाग्यों की प्राप्ति एवं प्रतिक्षण वृद्धि।

श्लो.58) "अरालं ते..." = सभी व्याधियों का निवारण; अभीष्ट जनों का आकर्षण; सरकार/न्यायलय की अनुकूलता।

श्लो.59) "स्फुरद्गण्डा..." = अपने समीपवर्ती लोगों की अनुकूलता एवं प्रभुत्व।

श्लो.60) "सरस्वत्याः..." = समस्त परापर विद्याओं की प्राप्ति; बुद्धिजाड्य का निवारण; कलाओं में दाक्षिण्य।

श्लो.61) "असौ नासा..." = कोश में स्थिरता; स्त्रियों को अक्षय लक्ष्मी (स्वर्णाभूषण-आदि) की प्राप्ति; मन पर नियन्त्रण।

श्लो.62) "प्रकृत्या..." = अनिद्रा का निवारण।

श्लो.63) "स्मितज्योत्स्ना..." = अपने समीपवर्ती प्राणियों का सम्मोहन; मोक्षलाभ।

श्लो.64) "अविश्रान्तं..." = महाकवित्व; वाक्सिद्धि; दूसरों पर कृपा एवं कोप करने का सामर्थ्य; स्त्रीरोगों का शमन; दाम्पत्य-कलह का निरास।

श्लो.65) "रणे जित्वा..." = सर्वत्र विजय; आश्चर्यजनक बुद्धिकौशल।

श्लो.66) "विपंच्या..." = संगीत-विद्या एवं नृत्य-गायन-कला में निपुणता; समाज में ख्याति; क्षुद्र रोगों की शान्ति।

श्लो.67) "कराग्रेण..." = स्त्रियों की अनुकूलता [किसी कार्य-विशेष की सिद्धि हेतु, न कि प्रेमप्रसंग-आदि हेतु]; देवीदर्शन; सरकार एवं उच्चाधिकारियों की अनुकूलता।

श्लो.68) "भुजाश्लेषा..." = लक्ष्मीप्राप्ति; सरकार, उच्चाधिकारी एवं न्यायालय की अनुकूलता।

श्लो.69) "गले रेखा..." = संगीतविद्या में नैपुण्य; लम्बा सुखी दाम्पत्य-जीवन; सर्वत्र विजय।

श्लो.70) "मृणाली..." = पूर्वकृत अपराधों की क्षान्ति, अपने समीपवर्ती लोगों की अनुकूलता; शिवकोप से मुक्ति; अनुष्ठान-सिद्धि; भयनिवारण।

श्लो.71) "नखानां..." = लौकिक कार्यसिद्धि में अलौकिक शक्तियों की अदृश्यता सहायता का लाभ।

श्लो.72) "समं देवि..." = रात्रि, यात्रा या एकान्त के व्यवधानों का निवारण; मनोबल का लाभ।

श्लो.73) "अमू ते..." = आत्मसन्तुष्टि; स्तनपान-सम्बन्धी बाधाओं की शान्ति; ब्रह्मसाक्षात्कार।

श्लो.74) "बहत्यम्ब..." = व्यक्तित्व का विकास; सत्कार्यों में रुचि एवं कीर्ति की निरन्तर वृद्धि।

श्लो.75) "तव स्तन्यं..." = कवित्व-सिद्धि, मेधाशक्ति (तीव्र स्मृति) का लाभ।

श्लो.76) "हरक्रोध..." = संसार की अनित्यता का ज्ञान; वैराग्य-लाभ; मोक्षमार्ग में प्रगति; आर्थिक एवं न्यायिक मामलों में विजय।

श्लो.77) "यदेतत्..." = सरकार, न्यायालय या उच्चाधिकारी की अनुकूलता; अन्तर्दृष्टि का लाभ।

श्लो.78) "स्थिरो गङ्गा..." = सभी समीपवर्ती लोगों एवं सरकारी अधिकारियों का सम्मोहन।

श्लो.79) "निसर्गक्षीणस्य..." = सम्मोहन-कला एवं इन्द्रजाल (जादू) में निपुणता।

श्लो.80) "कुचौ सद्यः..." = इन्द्रजाल दिखाने की क्षमता; विरोधियों का स्तम्भन; प्रभुत्वशाली व्यक्तित्व।

श्लो.81) "गुरुत्वं विस्तारं..." = अपने समक्ष आए विरोधी के तेज एवं प्रभाव का अभिभव/स्तम्भन; अग्निकाण्ड से रक्षा।

श्लो.82) "करीन्द्राणां..." = असाध्य कार्यों में सफलता; जल-सम्बन्धी संकटों से सुरक्षा।

श्लो.83) "पराजेतुं..." = विरोधी अधिकारियों एवं प्रबल शत्रुओं की अनुकूलता; राष्ट्रशत्रुओं का पराभव; उच्चपद की प्राप्ति।

श्लो.84) "श्रुतीनां..." = भावान्तर (समाधि-परस्वप्न-परकाय-आदि) में सहज गमन; सिद्धि लाभ।

श्लो.85) "नमोवाकं.." = भूत-आदि दैविक बाधाओं का

शमन; सुख-सौभाग्य की वृद्धि; देवीभक्ति की प्राप्ति।

श्लो.86) "मृषा कृत्वा..." = पिशाच-बाधा का निवारण; शत्रुओं पर विजय; आत्मबल की वृद्धि।

श्लो.87) "हिमानी..." = समीपवर्ती प्राणियों से अनुकूल कार्यों को करवाने की क्षमता (सन्दर्भ=मेंटलिस्ट); प्रचुर सम्पत्ति का लाभ।

श्लो.88) "पदं ते..." = जंगली पशुओं की अनुकूलता; संकटों से मुक्ति; जीवन में प्रगति।

श्लो.89) "नखैर्नाक..." = सभी रोगों का निवारण; शारीरिक बल की वृद्धि।

श्लो.90) "ददाने..." = दरिद्रता एवं गृहक्लेश का निवारण; परकृत्य/अभिचार-आदि का शमन।

श्लो.91) "पदन्यास..." = धन एवं भूमि का स्थायी लाभ; प्रभावशाली लोगों से सम्पर्क।

श्लो.92) "गतास्ते..." = उच्चाधिकार-प्राप्ति; नेतृत्व-क्षमता का विकास; खोई वस्तु या अचल सम्पत्ति का लाभ; विद्याप्राप्ति।

श्लो.93) "अराला..." = सभी मनोरथों की सिद्धि; धन-ऐश्वर्य का लाभ।

श्लो.94) "कलङ्कः..." = इष्ट पदार्थ की सिद्धि; तेजस्विता।

श्लो.95) "पुरराते..." = व्रणापकरण; घाव-चोट-शल्यचिकित्सा-आदि में शीघ्र स्वास्थ्य लाभ; स्नायु-रोगों का शमन; ऋण से मुक्ति।

श्लो.96) "कलत्रं..." = प्रवचन/अध्यापन का कौशल; दीर्घकालिक रोगों की शान्ति; दूसरों पर प्रभुत्व।

श्लो.97) "गिरामाहुः..." = विद्या एवं शारीरिक बल की वृद्धि ; प्रभावी एवं विवेकी व्यक्तित्व का लाभ।

श्लो.98) "कदा काले..." = पराविद्या की प्राप्ति; स्त्रियों में सुगम गर्भधारण; पुरुषों में प्रचुर ओजस्विता।

श्लो.99) "सरस्वत्या..." = विद्या, शौर्य, तेज, बल, बुद्धि-आदि सहित भगवत्कृपा का लाभ।

श्लो.100) "प्रदीपज्वालाभिः..." = सभी कार्यों की सहज सिद्धि; दुष्प्रारब्ध से मुक्ति।

कुछ इस प्रकार हमारे पूर्वाचार्यों ने 'सौन्दर्यलहरी' के विभिन्न श्लोकों के दीर्घकालिक पाठ से मिलने वाले उत्तम फलों का वर्णन किया है। सभी ज्योतिषी मित्रों से हमारा कृतांजलि अनुरोध है : आपके पास जन्मकुण्डली दिखाने आया कोई जातक यदि अपनी कामना-सिद्धि हेतु मन्त्रजप की जिज्ञासा करे, तो--अन्यान्य मन्त्रों के झंझट में न फंसकर--उन्हें उपर्युक्त सूची के आधार पर 21 या 48 दिनों तक 'सौन्दर्यलहरी' के अपेक्षित श्लोक का प्रतिदिन स्फटिक-माला (अथवा करमाला) पर 108 या 1008 बार जप करते हुए अभीष्ट-सिद्धि हेतु भगवतीजी से प्रार्थना करने का निर्देश दें साथ ही; उन्हें सप्ताह में न्यूनतम एक दिन 'सौन्दर्यलहरी' के सम्पूर्ण पाठ हेतु प्रेरित करें (यदि सम्भव हो तो शुक्रवार, सायंकाल)। जबकि ज्योतिषी लोग स्वयं भी अपनी दैनिक साधना में 'सौन्दर्यलहरी' के एक पूर्ण पाठ को अवश्य सम्मिलित करे, इससे परम कल्याण होगा। केवल इतनी सावधानी रखनी है कि उपासकों को मद्य-मांस-व्यभिचार से प्रयासपूर्वक दूर रहना चाहिए तथा गन्ने को अपने दाँत से कदापि चबाना नहीं चाहिए; क्योंकि वह भगवतीजी का धनुष/आयुध है। इस सन्दर्भ में कांची-कामकोटि-पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य ब्रह्मलीन अनन्तश्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती स्वामीजी महाराज (1894-1994 ई.) के निम्नांकित प्रवचनांश अतीव प्रासंगिक हैं :

"It is not that only those who are initiated into Sri Vidya Tantra who can read hymns like the Saundarya Lahari, which contains ideas that are to be guarded as a secret. There is nothing wrong in everyone reading the hymn as a devotional work with the resolve. Through this hymn, may we be enabled to fix our minds on Ambal for a few moments at least" ... "As a devotional composition, or as a poem, anyone will find reading the Saundarya Lahari rewarding. But if, it is regarded as a Mantra Shastra, from which benefits are to be derived, one must be guided by a Guru and one must observe a certain disciple."

['Voice of God', Vol. 6, pp.453 & 335]

इस आप्तवाणी के आधार पर भी हम कह सकते हैं कि "भगवतीजी की स्तुति-प्रार्थना के रूप में 'सौन्दर्यलहरी' एवं इसके फुटकर श्लोकों का पाठ करने में प्राणिमात्र को अधिकार है।" यहाँ सामान्य प्रार्थना-विधि कही गई; जो कि कम प्रभावशाली नहीं है। तथापि 'श्रीविद्यामहार्णव' आदि में संकलित इन सौ श्लोकों की विशेष अनुष्ठान-विधि (विनियोग-न्यास-ध्यान-मुद्राराधन-आदि) को सीखने हेतु किन्हीं श्रीविद्योपासक गुरु का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन अनिवार्य है। नारायणस्मृतिः।। ❐

ISSN 2278-7933

All India Federation of Astrologers Society

RESEARCH JOURNAL OF ASTROLOGY

Volume : 23 No. : 2 | April - June 2025 | Price : Rs. 50/-

From the Editor's Desk

12 Navagraha Remedies Method

Research

14 Marriages, Delay and Denial
by Sitaram Singh

Review

18 Significance of Planets in Astrology
by Hrushikesh Patel

22 Planets in the 12th House
by Jay Tripathi

24 Reiki : Universal Life Force Energy
by Acharya Upasana Saini

29 Your Habits Hindering Your Career Goals
by Dr. Amit Kumar 'Ram'

31 Saturn's Influence on Each Ascendant..
by Nidhi Trivedi

शोध

34 64वें नवांश की राशि : महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचक
इंजी. संजय श्रीवास्तव

38 वेदांग नेत्र ज्योतिष एवं घटना क्रम का होना न होना
डॉ. अमित कुमार 'राम'

समीक्षा

40 सौन्दर्यलहरी-उपासना-प्रकल्प
अंकुर नागपाल (दिल्ली)

45 विवाह मेलापक में अंकशास्त्र की उपयोगिता
डॉ. टीपू सुल्तान

48 वास्तु उपाय
आचार्या उपासना सैनी

51 जानिए ज्योतिष क्या है और जीवन में ग्रहों की कैसी होती है भूमिका ?
मनोज कुमार द्विवेदी

53 रत्न मीमांसा
डॉ. राजीव रंजन

55 मेलापक में अष्टकूट के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण विचारणीय आधार
डॉ. प्रशांत खानवलकर

वास्तु

58 शक्तिपीठ हरसिद्धि का वास्तु आकर्षित करता भक्तों को
वास्तु गुरु कुलदीप सलूजा